SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

उत्तर प्रदेश की उपशास्त्रीय गायन विधा में महिला कलाकारों का योगदान

MEENA VERMA

Research Scholar, Department of Music, Maharishi University, Lucknow

सार

संगीत कला का अस्तित्व संसार की सभी जातियों में प्राचीनकाल से मिलता है और इस बात की पुष्टि हमारे वेदों से होती है। वैदिक काल में ऋचाओं का गान होता है था जिसे स्त्री तथा पुरूष दोनों के द्वारा किया जाता था। कला और संस्कृति का उत्तर प्रदेश में एक लंबा इतिहास रहा है। उत्तर प्रदेश को सुन्दर हस्तशिल्प, नृत्य, संगीत एवं साहित्य के लिए जाना जाता हैं। स्त्री और पुरूष सदैव से एक दूसरे के पूरक माने गए हैं और यही प्रमाणित करती है द्वैत की श्रेष्ठता को। उत्तर प्रदेश की उपशास्त्रीय गायन विधा में पुरूष कलाकारों के साथ ही साथ महिला कलाकारों का योगदान भी उल्लेखनीय है। इन महिला कलाकारों ने अपनी गायन साधना के माध्यम से उपशास्त्रीय गायन को सुदृढ़ बनाया एवं आम जनमानस के मानसिक पटल पर कभी ना मिटने वाली छाप को अंकित किया, इनमें अग्रणी उल्लेखनीय नाम है- बेगम अख़्तर, गिरिजा देवी, सिद्धेश्वरी देवी, शांति हीरानंद, मालिनी अवस्थी।

कुंजीशब्द: *संगीत, उपशास्त्रीय गायन, महिला कलाकार, बेगम अख्तर, शांति हीरानंद, सिद्धेश्वरी देवी, मालिनी अवस्थी।*

बेगम अख़्तर

इनको अख्तरी बाई फैज़ाबादी के नाम से जाना जाता है। इनकी माँ मुश्तरी बाई ने अपने जीवन का सब कुछ अपनी बेटी के लिए दाव पर लगाया और उनकी कला को आगे बढ़ाने में इनका बहुत सहयोग रहा। इनका बचपन का नाम बिब्बी था। इनका जन्म 07 अक्टूबर 1914 को हुआ था। अख़्तरी साहिबा की ठुमरी, दादरा, एवं गज़ल गायकी रूह को छू लेने वाली है। कलाकार एवं बेहतरीन फनकारा के रूप में आपको भारत सरकार द्वारा पद्मश्री एवं पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया। अख़्तरी साहिबा को ''माल्लिकाए गज़ल'' के नाम से भी जाना जाता है। अख़्तरी साहिबा ने कई फिल्मों में भी काम किया है। इनकी एक बहुत ही प्रसिद्ध ठुमरी है जो कि राग काफी में निबद्ध है जिसके बोल हैं-

ठुमरी

कैसी ये धूम मचाई

इसके अलावा इनका एक बहुत प्रसिद्ध दादरा है जिसको वर्तमान समय में फिल्म ''डेढ़ इश्किया'' में फिल्माया गया है जिसके बोल हैं-

हमरी अटरिया पे आओ सांवरिया
देखा देखी बलम हुई जाए
तसव्वुर में चले आते हो कुछ बातें भी होती हैं
शब-ए-फुरक़त भी होती है मुलाकातें भी होती है
हमरी अटरिया पे आओ सांवरिया।

इनकी एक बहुत प्रसिद्ध ठुमरी राग मिश्रगारा में है जिसके बोल हैं-

पिया नहीं आए गुजर गई रतिया।

इनके द्वारा गायी गयी एक और ठुमरी जो कि बहुत प्रसिद्ध है जिसके बोल हैं-

जा रे कागा पिया से संदेसवा मोरा कहियो जाए।

शान्ति हीरानंद

इनका जन्म 1932 लखनऊ में हुआ था। यह बेगम अख़्तर की शिष्या थीं और उनको अम्मी कहती थी। ये दादरा, ठुमरी की महान गायिका थीं, भारत सरकार ने 2007 में इन्हें पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया। शास्त्रीय गायिका के साथ-साथ ये लेखिका भी थी इन्होंने ''बेगम

अख़्तर: द स्टोरी ऑफ माई अम्मी'' नामक पुस्तक भी लिखी। ये पुस्तक बेगम साहिबा की जीवनी पर लिखी गयी है। बेगम अख़्तर की शिष्य परम्परा में इनको रत्नशिष्या भी कहते हैं। क्योंकि उनकी शिष्य परम्परा की रवायत को कायम रखने वाली सबसे मज़बूत स्तम्भ थी। इन्होंने बेगम साहिबा की गाई हुई ठुमरियों, गजलों एवं दादरों को बहुत ही खूबसूरती से गाया है कि उसकी जितनी तारीफ की जाए कम है। इनका बातचीत का लहज़ा हमेशा से ही लखनवी रहा जो कि इनके व्यक्तित्व को निखारता है। इन्होंने कई फिल्मों में गायन भी किया है। उनके बारे में एक बार बेगम अख़्तर ने कहा था ''मेरी मौत के बाद अगर आप मेरी आवाज़ सुनना चाहते हैं तो इसे शान्ति के गाने के माध्यम से सुन सकते हैं।''

मालिनी अवस्थी

मालिनी अवस्थी का जन्म कन्नौज उत्तर प्रदेश में 11 फरवरी 1967 को हुआ। इन्हें भारत की लोकरानी भी कहा जाता है। ये अवधी, भोजपुरी, बृज तथा बुन्देलखंड़ी आदि बोलियों में गाती है। इन्होंने छक्ज्ट पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम जुनून में भाग लेकर उत्तर प्रदेश की गायन शैलियों (कजरी, दादरा, सोहर, बन्ना, झूला एवं होली) को टेलीविजन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया। इन्होंने कई फिल्मों में पार्श्वगायन भी किया जिनमें ''दम लगा के हईशा'' फिल्म में ''सुन्दर सुशील'' गाना गाया है तथा ''चार फुटिया छोकरे'' फिल्म में भी गाना गाया है। यह ठुमरी, दादरा, गज़ल एवं लोक संगीत की एक उत्कृष्ट कलाकारा है। मुझे कई बार इनको लाइव सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। सन 2016 में इन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया। इनके कुछ लोकगीत बहुत ही प्रसिद्ध हैं जिसे ये बहुत सुन्दर अंदाज में गाती हैं जिनमें

1. रेलिया बैरन पिया को लिय जाये रे,

2. सैया मिले लरकईया,

गिरिजा देवी

8 मई 1929 को वाराणसी में इनका जन्म हुआ। भारत की महान सुप्रसिद्ध उपशास्त्रीय गायिका थी। बनारस घराना एवं पूर्वी अंग के ठुमरी दादरा एवं टप्पा गायन शैली की असाध्य साधिका रही। गन्ना संस्थान लखनऊ में इनका लाइव कार्यक्रम देखने सुनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ मुझे याद है कि कार्यक्रम के दौरान बीच में इन्होंने कहा क मेरी उम्र 71 साल है लेकिन जिस समय में गाना गाती हूँ तो आप 71 में एक को पहले लगा सकते हैं और सुनने में वह 17 साल की लड़की की ही गायकी आपको अनुभव होगी और उनकी यह बात बिल्कुल सत्य थी। संगीत जगत में महान योगदान के लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री, पद्मभूषण एवं पद्मविभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। इनके द्वारा गाया गया एक दादरा जिसके बोल हैं-

श्याम तोहे नजरिया लग जाएगी।

इनकी टप्पा गायिकी बहुत ही सुन्दर थी, टप्पा गायिकी ऐसी है जिसे उस्तादाना गायिकी भी कहा जाए तो उचित है, क्योंकि यह गायिकी बहुत मुश्किल होती है, इसको गाते समय दानेदार तानों, मुर्कीं, तेज लय की तानों का प्रयोग होता है, तैयार गले की गायक ही इसे गा पाते हैं, गिरिजा देवी जी का गाया हुआ एक टप्पा जो की राग देश में निबद्ध है, इसके बोल हैं-

भूल जावे साडा दुख वे, तुसी करम करी।

सिद्धेश्वरी देवी

इनका जन्म 08 अगस्त 1908 को वाराणसी में हुआ। इनके पिता के नाम श्री श्याम तथा माता का नाम श्रीमती चन्दा उर्फ श्यामा था। डेढ़ वर्ष की आयु में ही इनके माता का देहान्त हो गया था, इनके पालन-पोषण इनकी नानी मैनाबाई ने किया जो कि स्वयं बड़ी ही प्रसिद्ध गायिका एवं नर्तकी थीं। भारत सरकार द्वारा इन्हें पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया। इन्होंने ऊषामूवीटोन की कुछ फिल्मों में भी अभिनय किया है। इनको ठुमरी गायन की सामग्री कहा जाता है। इनकी द्वारा गाई हुई एक बहुत ही सुन्दर ठुमरी जिसके बोल हैं-

नदिया किनारे मेरो गांव ए कान्हा,कब अइहौ हो कब जइहौ

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश उपशास्त्रीय गायन की महिला कलाकारें ने अपनी कला के माध्यम से उपशास्त्रीय गायन (ठुमरी एवं दादरा) को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन महिला कलाकारों की अदभुद कला के योगदान से वह संगीतप्रेमियों, रसिकजनों एवं श्रोतागणों तक पहुँचा जिसका पान अपनी कर्णेंद्रियों के माध्यम से आज भी हम कर रहे हैं और आगे निरंतर करते रहेंगे।

संदर्भ

1. वसंत, (2017), संगीत विशारद, हाथरसः संगीत कार्यालय।
2. रफीक रसाल मलिका, यानी सुरों की शहज़ादी, संगीत कार्यालय हाथरस, सितम्बर 2010
3. डा0 शत्रुधन शुक्ल (1983), ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
4. मुख्य लेखक-अब्दुल हलीम 'शरर', अनुवादक-नूर नबी ''अब्बासी'', ''पुराना लखनऊ'' (गुज़श्ता लखनऊ) 1971, नई दिल्ली, नेश्नल बुक ट्रस्ट।
5. डा0 भोलानाथ तिवारी (1961) ''भाषा विज्ञान'', इलाहाबाद, किताब महल।
6. ललनपिया, (1927) ''ललनसागर'', लखनऊ नवल किशोर प्रेस।
7. लक्ष्मी नारायण गर्ग (1957) ''हमारे संगीत रत्न'', हाथरस संगीत कार्यालय।
8. अटल तिवारी, रेडियो रूपक, ''बेगम अख़्तर का ज़िंदगीनामा'', सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।

साक्षात्कार

उस्ताद गुलशन भारती, लखनऊ कव्वाल बच्चा घराना।

YouTube Links

https://youtu.be/vpxRYWeeR6c?si=ODHIQF_H1JY3EgKy
https://youtu.be/UUA2NNi5qOA?si=zq1dpmlo-MUUJXK5
https://youtu.be/HBefPN18pbE?si=KAh_zj4WhYGA4jlC
https://youtu.be/EaJkwXshMuo?si=Zqw7U6tTYXsFOuFR
https://youtu.be/tkBLPqQZaws?si=yQze9BdbkzKSKAbY